2017

HINDI

(Major)

Paper : 4.1

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पठित पाठ के आधार पर पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) 'यशोधरा' के कवि कौन हैं?

(ख) 'जूही की कली' का प्रकाशन-काल लिखिए।

(ग) 'हिम तरंगिणी' के कवि कौन हैं?

(घ) सुमित्रानन्दन पंत को 'पद्मभूषण' की उपाधि कब मिली थी?

(ङ) 'कामायनी' के अंतिम सर्ग का नाम क्या है?

(च) 'युगांत' का प्रकाशन कब हुआ था?

(छ) 'साकेत' की सम्पूर्ण कथा का केन्द्रबिन्दु कौन है?

(ज) महादेवी वर्मा को 'भारतेन्दु पुरस्कार' से किसने सम्मानित किया था?

(झ) 'कुरुक्षेत्र' के कवि का नाम लिखिए।

(ञ) 'सरोज स्मृति' के रचनाकार कौन हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' कविता का मूल स्वर क्या है?

(ख) मनु क्यों चिन्तित है?

(ग) 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता का मूल स्वर क्या है?

(घ) मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-सम्बन्धी दो विशेषताएँ लिखिए।

(ङ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य-सम्बन्धी दो विशेषताएँ लिखिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) "तुम महान, मैं लघु, पर प्यारे,
क्या न मरण भी हाथ हमारे?"
—का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'नौका-विहार' में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार से हुआ है, लिखिए।

(ग) महादेवी की वेदना के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(घ) हरिऔध की साहित्यिक देन पर विचार कीजिए।

(ङ) आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में हरिवंशराय बच्चन के योगदान पर विचार कीजिए।

(च) 'आशा' सर्ग के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

4. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) मुझ भाग्यहीन की तू संबल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल
दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!

अथवा

अहे निष्ठुर परिवर्तन!
तुम्हारा ही ताण्डव नर्तन,
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!

(ख) ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू चोरों बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट भर खाना
मरने भी देते नहीं तड़प रह जाना!

अथवा

नींद थी मेरी अचल निस्पन्द कण-कण में
प्रथम जागृति थी जगत् के प्रथम स्पन्दन में,
प्रलय में मेरा पता पद-चिह्न जीवन में
शाप हूँ जो बन गया बरदान बंधन में,
कूल भी हूँ, कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $10 \times 2 = 20$

(क) 'परिवर्तन' कविता के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आशा' सर्ग के प्रतिपाद्य को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

(ख) 'हिमालय' कविता में निहित भाव का आकलन कीजिए।

अथवा

पठित कविता के आधार पर ऊर्मिला का विरह-वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

★ ★ ★